कक्षा 10वीं – संस्कृत, पीयूषम भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#8. कर्मवीर कथा (Karmveer Katha)

विष के दाँत

(लेखक: नलिन विलोचन शर्मा)

1. लेखक परिचय (नलिन विलोचन शर्मा)

- **जन्म:** 18 फरवरी 1916 ई० को पटना के **बदरघाट** में हुआ।
- **जन्मना भाषा:** वे जन्म से **भोजपुरी भाषी** थे।
- **पारिवारिक पृष्ठभूमि:** वे दर्शन और संस्कृत के प्रख्यात विद्वान **महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा** के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनकी माता का नाम **रत्नावती शर्मा** था।
- **शिक्षा:** उनकी स्कूल की पढ़ाई **पटना कॉलेजिएट स्कूल** से हुई और उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से **संस्कृत और हिंदी** में एम० ए० किया।
- **कार्यक्षेत्र:** वे हरप्रसाद दास जैन कॉलेज (आरा), राँची विश्वविद्यालय और अंत में **पटना विश्वविद्यालय** में प्राध्यापक रहे। सन् 1959 में वे पटना विश्वविद्यालय के **हिंदी विभाग के अध्यक्ष** बने और अपनी मृत्युपर्यंत (**12 सितंबर 1961 ई०**) इस पद पर बने रहे।
- **साहित्यिक योगदान:** वे हिंदी कविता में **प्रपद्यवाद** (नकेनवाद) के प्रवर्तक और नई शैली के आलोचक के रूप में जाने जाते हैं।
- **प्रमुख रचनाएँ:**
    - **आलोचनात्मक ग्रंथ:** 'दृष्टिकोण', 'साहित्य का इतिहास दर्शन', 'मानदंड', 'हिंदी उपन्यास विशेषतः प्रेमचंद', 'साहित्य तत्त्व और आलोचना'।
    - **कहानी संग्रह:** 'विष के दाँत' और 'सत्रह असंगृहीत पूर्व छोटी कहानियाँ'।

कक्षा 10वीं – संस्कृत, पीयूषम भाग-2 (बिहार बोर्ड)

#8. कर्मवीर कथा (Karmveer Katha)

2. कहानी का सारांश (विष के दाँत)

'विष के दाँत' कहानी एक **सामाजिक विषमता** को उजागर करती है। यह कहानी **मध्यम वर्ग** के लोगों की आकांक्षाओं, खोखलेपन और **लिंग-भेद** की मानसिकता को सामने लाती है।

- **सेन साहब का परिवार:** कहानी **सेन साहब** नामक एक **धनाढ्य व्यक्ति** के परिवार पर केंद्रित है। उनकी पाँच लड़कियाँ हैं, जो अत्यंत **शिष्ट** और घर के नियमों का पालन करने वाली हैं। उनका एक बेटा है—**खोखा** (जिसका नाम कासू है)—जो उनके बुढ़ापे का सहारा है और जिसके लिए घर के सभी नियम **शिथिल** हैं।
- **खोखा का स्वभाव:** सेन दंपति खोखा को **इंजीनियर** बनाना चाहते हैं, इसलिए उसकी हर गलती को **क्षमा** कर दिया जाता है। इस अतिशय दुलार के कारण खोखा **बदमिजाज** और **उच्छृंखल** (अटपटा व्यवहार करने वाला) बन गया है। वह अपने घर के कीमती सामानों को तोड़ता-फोड़ता है, जिसे सेन साहब उसकी **इंजीनियरी** की ट्रेनिंग मानते हैं।
- **वर्ग भेद और द्वंद्व:** सेन साहब की मोटर कार **'ब्लैक शाइन'** उनकी हैसियत का प्रतीक है। एक दिन खोखा मोटर कार के पास खड़ा होकर उसे छूने की कोशिश करता है और कार के अगले हिस्से की **हवा निकाल देता है**। यह देखकर **ड्राइवर** उसे धक्का दे देता है। तभी, सेन साहब के **किरानी** (चपरासी) का बेटा **मदन** जब खेलने के लिए आता है, तो उसे खोखा से **अलग** रखा जाता है।
- **कहानी का चरम:** मदन जब खोखा को छूने और उसके साथ खेलने की कोशिश करता है, तो खोखा की अतिशय अशिष्टता के कारण **मदन खोखा पर हमला** कर देता है और उसके **दो दाँत तोड़** देता है।
- **निष्कर्ष:** इस घटना के बाद सेन साहब मदन के पिता **गिरधरलाल** को नौकरी से निकाल देते हैं, लेकिन कहानी का मर्म यही है कि खोखा की **असामाजिक प्रवृत्तियाँ**

ही उसके दाँत तोड़ने का कारण बनीं। लेखक यह दर्शाते हैं कि **गरीबों का बच्चा** अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अंततः **बदला** लेता है। 'विष के दाँत' शीर्षक समाज में व्याप्त **भेदभाव** और **खोखा के कुसंस्कारों** दोनों का प्रतीक है, जो एक विष के समान है।